इकाई-IV

16. मेरे बचपन के दिन

रचनाकार

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में उत्तर प्रदेश के फ़रूखाबाद शहर में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा प्रयाग में हुई। प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्या पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफ़ी प्रयत्न किए। सन् 1987 में उनका देहांत हो गया।

महादेवी जी छायावाद के प्रमुख कवियों में से एक थीं। नीहार, रश्मि, नीरजा, यामा, दीपशिखा उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। कविता के साथ-साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं। अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, श्रृंखला की कड़ियाँ उनकी महत्वपूर्ण गद्य रचनाएँ हैं। महादेवी वर्मा को साहित्य अकादमी एवं ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया।

महादेवी वर्मा की साहित्य साधना के पीछे एक ओर आज़ादी के आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है। हिंदी गद्य साहित्य में संस्मरण एवं रेखाचित्र को बुलंदियों तक पहुँचाने का श्रेय महादेवी वर्मा जी को है। उनके संस्मरणों और रेखाचित्रों में शोषित, पीड़ित लोगों के प्रति ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों के लिए भी आत्मीयता एवं अक्षय करुणा प्रकट हुई है। उनकी भाषा-शैली सरल एवं स्पष्ट है तथा शब्द चयन प्रभावपूर्ण और चित्रात्मक है।

प्रस्तावना प्रसंग

आ चल के तुझे
मैं ले के चलूँ
एक ऐसे गगन के तले।

जहाँ ग़म भी न हो
आँसू भी न हो
बस प्यार ही प्यार पले।

प्रश्न

1. कवि बच्चों को कैसे स्थान पर ले जाना चाहता है?
2. बच्चों को कैसा व्यवहार अच्छा लगता है?
3. बचपन के संस्कारों का हमारे व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है?

भूमिका

मेरे बचपन के दिन में महादेवी वर्मा जी ने अपने बचपन के उन दिनों को स्मृति के सहारे लिखा है जब वे विद्यालय में पढ़ रही थीं। इस अंश में लड़कियों के प्रति सामाजिक रवैये, विद्यालय की सहपाठिनों, छात्रावास के जीवन और स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसंगों का बहुत ही सजीव वर्णन है।

SCERT TELANGANA

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियाँ बहुत बदल जाती हैं।

अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मेरे परिवार में प्रायः दो सौ वर्ष तक कोई लड़की थी ही नहीं। सुना है, उसके पहले लड़कियों को पैदा होते ही परमधाम भेज देते थे। फिर मेरे बाबा ने बहुत दुर्गा-पूजा की। हमारी कुल-देवी दुर्गा थीं। मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा। जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता था। परिवार में बाबा फ़ारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेज़ी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था।

मेरी माता जबलपुर से आईं तब वे अपने साथ हिंदी लाईं। वे पूजा-पाठ भी बहुत करती थीं। पहले-पहल उन्होंने मुझको 'पंचतंत्र' पढ़ना सिखाया।

बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएँगे। मेरे संबंध में उनका विचार बहुत ऊँचा रहा। इसलिए 'पंचतंत्र' भी पढ़ा मैने, संस्कृत भी पढ़ी। ये अवश्य चाहते थे कि मैं उर्दू-फ़ारसी सीख लूँ, लेकिन वह मेरे वश की नहीं थी। मैंने जब एक दिन मौलवी साहब को देखा तो बस, दूसरे दिन मैं चारपाई के नीचे जा छिपी। तब पंडित जी आए संस्कृत पढ़ाने। माँ थोड़ी संस्कृत जानती थीं। गीता में उन्हें विशेष रुचि थी। पूजा-पाठ के समय मैं भी बैठ जाती थी और संस्कृत सुनती थी। उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। मिशन स्कूल में वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहाँ जाना बंद कर दिया। जाने में रोने-धोने लगी। तब उन्होंने मुझको क्रास्थवेट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहाँ मैं पाँचवें दर्जे में भर्ती हुई। यहाँ का वातावरण बहुत अच्छा था उस समय। हिंदू लड़कियाँ भी थीं, ईसाई लड़कियाँ भी थीं। हम लोगों का एक ही मेस था। उस मेस में प्याज तक नहीं बनता था।

वहाँ छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएँ रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। सातवें दर्जे में वे मुझसे दो साल सीनियर थीं। वे कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में माँ लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सवेरे 'जागिए कृपानिधान पंछी बन बोले' यही सुना जाता था। प्रभाती गाती थीं। शाम को मीरा का कोई पद गाती थीं। सुन-सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरंभ किया। यहाँ आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी। लेकिन सुभद्रा जी बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा-छिपाकर लिखती थी मैं। एक दिन उन्होंने कहा, 'महादेवी, तुम कविता लिखती हो?' तो मैंने डर के मारे कहा, 'नहीं'। अंत में उन्होंने मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी ली और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। तब जैसे किसी अपराधी को पकड़ते हैं, ऐसे उन्होंने एक हाथ में कागज़ लिए और एक हाथ से मुझको पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आयीं कि ये कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई। क्रास्थवेट में एक पेड़ की डाल नीची थी। उस डाल पर हम लोग बैठ जाते थे। जब और लड़कियाँ खेलती थीं तब हम लोग तुक मिलाते थे। उस समय एक पत्रिका निकलती थी- 'स्त्री दर्पण'- उसी में भेज देते थे। अपनी तुकबंदी छप जाती थी। फिर यहाँ कवि-सम्मेलन होने लगे तो हम लोग भी उनमें जाने लगे। हिंदी का उस समय प्रचार-प्रसार था। मैं सन् 1917 में यहाँ आई थी। उसके उपरांत गांधी जी का सत्याग्रह आरंभ हो गया और आनंद भवन स्वतंत्रता के

SCERT TELANGANA

संघर्ष का केंद्र हो गया। जहाँ-तहाँ हिन्दी का भी प्रचार चलता था। कवि-सम्मेलन होते थे तो क्रास्थवेट से मैडम हमको साथ लेकर जाती थीं। हम कविता सुनाते थे। कभी हरिऔध जी अध्यक्ष होते थे, कभी श्रीधर पाठक होते थे, कभी रत्नाकर जी होते थे, कभी कोई होता था। कब हमारा नाम पुकारा जाए, बेचैनी से सुनते रहते थे। मुझको प्रायः प्रथम पुरस्कार मिलता था। सौ से कम पदक नहीं मिले होंगे उसमें।

एक बार की घटना याद आती है कि एक कविता पर मुझे चाँदी का एक कटोरा मिला। बड़ा नक्काशीदार, सुंदर। उस दिन सुभद्रा नहीं गई थीं। सुभद्रा प्रायः नहीं जाती थीं कवि-सम्मेलन में। मैंने उनसे आकर कहा, 'देखो, यह मिला।'

सुभद्रा ने कहा, 'ठीक है, अब तुम एक दिन खीर बनाओ और मुझको इस कटोरे में खिलाओ।' उसी बीच आनंद भवन में बापू आए। हम लोग तब अपने जेब खर्च में से एक-एक, दो-दो आने देश के लिए बचाते थे और जब बापू आते थे तो वह पैसा उन्हें दे देते थे। उस दिन जब बापू के पास मैं गई तो अपना कटोरा भी लेती गई। मैंने निकालकर बापू को दिखाया। मैंने कहा, 'कविता सुनाने पर मुझको यह कटोरा मिला है।' कहने लगे, 'अच्छा, दिखा तो मुझको।' मैंने कटोरा उनकी ओर बढ़ा दिया तो उसे हाथ में लेकर बोले, 'तू देती है इसे?' अब मैं क्या कहती? मैंने दे दिया और लौट आई। दुख यह हुआ कि कटोरा लेकर कहते, कविता क्या है? पर कविता सुनाने को उन्होंने नहीं कहा। लौटकर अब सुभद्रा जी से कहा कि कटोरा तो चला गया। सुभद्रा जी ने कहा, 'और जाओ दिखाने' फिर बोली, 'देखो भाई, खीर तो तुमको बनानी होगी। अब चाहे पीतल की कटोरी में खिलाओ, चाहे फूल के कटोरे में' -फिर भी मुझे मन ही मन प्रसन्नता हो रही थी कि पुरस्कार में मिला अपना कटोरा मैंने बापू को दे दिया।

सुभद्रा जी छात्रावास छोड़कर चली गईं। तब उनकी जगह एक मराठी लड़की ज़ेबुन्निसा हमारे कमरे में आकर रहीं। वह कोल्हापुर से आई थी। ज़ेबुन मेरा बहुत-सा काम कर देती थी। वह मेरी डेस्क साफ़ कर देती थी, किताबें ठीक से रख देती थी और इस तरह मुझे कविता के लिए कुछ और अवकाश मिल जाता था। ज़ेबुन मराठी शब्दों से मिली-जुली हिंदी बोलती थी। मैं भी उससे कुछ-कुछ मराठी सीखने लगी थी। वहाँ एक उस्तानी जी थीं- ज़ीनत बेगम। ज़ेबुन जब 'इकड़े-तिकड़े' या 'लोकर-लोकर' जैसे मराठी शब्दों को मिलाकर कुछ कहती तो उस्तानी जी से टोके बिना न रहा जाता था- 'वाह! देसी कौवा, मराठी

SCERT TELANGANA

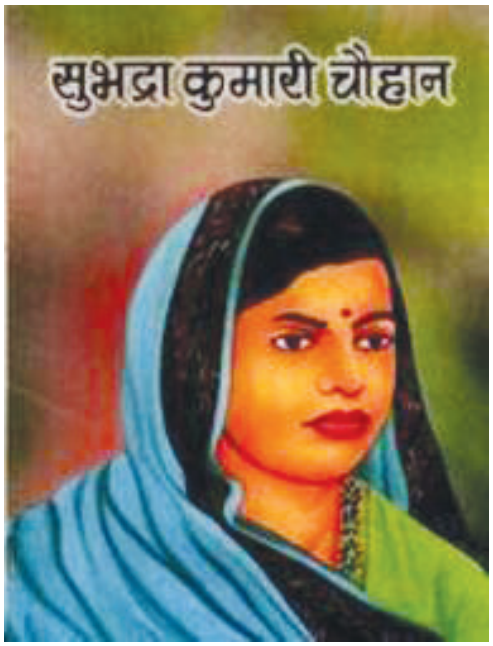

बोली!' ज़ेबुन कहती थी, 'नहीं उस्तानी जी, यह मराठी कौआ मराठी बोलता है।' ज़ेबुन मराठी महिलाओं की तरह किनारीदार साड़ी और वैसा ही ब्लाउज़ पहनती थी। कहती थी, हम मराठी हूँ तो मराठी बोलेंगे!'

उस समय यह देखा मैंने कि सांप्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं वे आपस में अवधी बोलती थीं; बुंदेलखंड की आती थीं, वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिंदी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।

मैं जब विद्यापीठ आई तब तक मेरे बचपन का वही क्रम चला जो आज तक चलता आ रहा है। कभी-कभी बचपन के संस्कार ऐसे होते हैं कि हम बड़े हो जाते हैं, तब तक चलते हैं। बचपन का एक और भी संस्कार था कि हम जहाँ रहते थे वहाँ जवारा के नवाब रहते थे। उनकी नवाबी छिन गई थी। वे बेचारे एक बँगले में रहते थे। उसी कंपाउंड में हम लोग रहते थे। बेगम साहिबा कहती थीं- 'हमको ताई कहो! हम लोग उनको 'ताई साहिबा' कहते थे। उनके बच्चे हमारी माँ को चची जान कहते थे। हमारे जन्मदिन वहाँ मनाए जाते थे। उनके जन्मदिन हमारे यहाँ मनाए जाते थे। उनका एक लड़का था। उसको राखी बाँधने के लिए वे कहती थीं। बहनों को राखी बाँधनी चाहिए। राखी के दिन सवेरे से उसको पानी भी नहीं देती थीं। कहती थीं, राखी के दिन बहनें राखी बाँध जाएँ तब तक भाई को निराहार रहना चाहिए। बार-बार कहलाती थीं- 'भाई भूखा बैठा है, राखी बँधवाने के लिए।' फिर हम लोग जाते थे। हमको लहरिए या कुछ मिलते थे। इसी तरह मुहर्रम में हरे कपड़े उनके बनते थे तो हमारे भी बनते थे फिर एक हमारा छोटा भाई हुआ वहाँ, तो ताई साहिबा ने पिताजी से कहा, 'देवर साहब से कहो, वो मेरा नेग ठीक करके रखें। मैं शाम को आऊँगी।' वे कपड़े-वपड़े लेकर आईं। हमारी माँ को वह दुलहन कहती थीं। कहने लगीं, 'दुलहन, जिनके ताई-चाची नहीं होती हैं वो अपनी माँ के कपड़े पहनते हैं, नहीं तो छह महीने तक चाची-ताई पहनाती हैं। मैं इस बच्चे के लिए कपड़े लाई हूँ। यह बड़ा सुंदर है। मैं अपनी तरफ़ से इसका नाम 'मनमोहन' रखती हूँ।'

वही प्रोफ़ेसर मनमोहन वर्मा आगे चलकर जम्मू यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर रहे, गोरखपुर यूनिवर्सिटी के भी रहे। कहने का तात्पर्य यह कि मेरे छोटे भाई का नाम वही चला जो ताई साहिबा ने दिया। उनके यहाँ भी हिंदी चलती थी, उर्दू भी चलती थी। यों, अपने घर में वे अवधी बोलते थे। वातावरण ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वो सपना खो गया।

शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।

SCERT TELANGANA

प्रश्न–अभ्यास

अर्थग्राह्यता–प्रतिक्रिया

❖ विचार–विमर्श

1. महादेवी वर्मा के बचपन के दिन लगभग सौ वर्ष पहले थे। आज के बच्चों के बचपन एवं महादेवी वर्मा के बचपन की परिस्थितियों की तुलना कीजिए।
2. महादेवी वर्मा के बचपन के दिनों में लड़कियों को पढ़ने की स्वतंत्रता अधिक न थी। इसके क्या कारण हो सकते हैं? चर्चा कीजिए।
3. आज समाज विकास की चरम सीमा पर पहुँच चुका है, फिर भी लड़कियों की शिक्षा के प्रति उतनी सजगता नहीं है जितनी लड़कों की शिक्षा के प्रति। इसका क्या कारण है? इसके लिए क्या किया जाना चाहिए? चर्चा कीजिए।

❖ पढ़ना, भाव समझना और भाव विस्तार

क. पाठ में उत्तर ढूँढ़िए।

1. इनसे संबंधित पंक्तियाँ पाठ में ढूँढ़कर लिखिए।
   - ♦ लेखन की प्रेरणा
   - ♦ देश–सेवा की अभिलाषा
   - ♦ रक्षा बंधन का त्यौहार और धार्मिक सद्भाव
2. लेखिका उर्दू–फ़ारसी क्यों नहीं सीख पाईं?
3. लेखिका ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?
4. मनमोहन कौन थे? उनका नाम किसने रखा था?

ख. पाठ समझकर उत्तर दीजिए।

1. जवारा के नवाब के साथ अपने पारिवारिक संबंधों को लेखिका ने आज के संदर्भ में स्वप्न जैसा क्यों कहा है?
2. "शायद वह सपना सत्य हो जाता तो भारत की स्थिति कुछ और होती।" आशय स्पष्ट कीजिए।
3. लेखिका ने छात्रावास के जिस बहुभाषी परिवेश की चर्चा की है उसे अपनी मातृभाषा में लिखिए।

ग. पढ़ने की योग्यता का विस्तार

प्रस्तुत गद्यांश पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बात सन् 1945-46 की है, जब पाकिस्तान नहीं बना था। उन दिनों लाहौर के एक कॉलेज में गणित के प्रोफ़ेसर थे– अनिलेंद्र गंगोपाध्याय। बहुत सज्जन, कर्मठ और छात्रों के प्रिय। इन मास्टर साहब का भी एक प्रिय छात्र था, बहुत ही होनहार और मेधावी।

SCERT TELANGANA

पैंतीस साल का लंबा समय गुजरता चला गया। मास्टर साहब बँटवारे के बाद कलकत्ता में आ बसे। इस लंबे दौर में वह मेधावी छात्र विज्ञान के क्षेत्र में नए आयाम खोलता हुआ, सम्मान-दर-सम्मान पाता हुआ सर्वोच्च सम्मान तक पहुँचा।

एक दिन वह छात्र अचानक अपने वयोवृद्ध और रुग्ण श्रद्धेय मास्टर साहब से मिलने आ गया। समय की दूरी को मिटाकर जब गुरु और शिष्य मिले, तो वह मिलन का दृश्य अद्भुत था।

शिष्य ने नोबेल पुरस्कार में मिले अपने स्वर्ण पदक को गुरु के चरणों में भेंटकर अपनी श्रद्धा अर्पित करते हुए कहा, "मास्टर साहब, आपने जो कुछ मुझे पढ़ाया था, वह इतना अधिक था कि उससे अधिक और कुछ मैंने नहीं पढ़ा। यह पदक आपके उसी ज्ञान की देन है, जो आपने मुझे दिया।"

वयोवृद्ध और रुग्ण मास्टर साहब ने भावविभोर होकर स्वर्णपदक को अपने हाथ में उठा लिया। वह उसे देर तक गौर से देखते रहे और फिर अपने शिष्य को आशीर्वाद देते हुए उसे सौंप दिया। प्रो. अनिलेंद्र गंगोपाध्याय का यह मेधावी छात्र और कोई नहीं, बल्कि पाकिस्तान के सुप्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी प्रो. अब्दुल सलाम थे। प्रो. सलाम गत दिनों भारत की यात्रा पर आए थे।

1. भारत की यात्रा पर कौन आए थे?
2. इस घटना के बाद प्रो. अनिलेंद्र अपने शिष्य प्रो.सलाम के बारे में क्या सोचते होंगे?
3. इस घटना से हमें क्या सीख मिलती है?

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

❖ स्वाभिव्यक्ति

क. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. ज़ेबुन्निसा महादेवी वर्मा के लिए बहुत काम करती थी। उनके स्थान पर यदि आप होतीं/होतें तो महादेवी से आपकी क्या अपेक्षा होती?
2. महादेवी वर्मा को काव्य प्रतियोगिता में चाँदी का कटोरा मिला था। अनुमान लगाइए कि आपको इस तरह का कोई पुरस्कार मिला हो और वह देशहित में या किसी आपदा निवारण के काम में देना पड़े तो आप कैसा अनुभव करेंगे/करेंगी?

ख. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. "मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है। इस कथन के आलोक में आप यह अनुमान लगाएँ कि-

SCERT TELANGANA

- उस समय लड़कियों की दशा कैसी थी?
- लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

सृजनात्मक कार्य

महादेवी जी के इस संस्मरण को पढ़ते हुए आपके मानस-पटल पर भी अपने बचपन की कोई स्मृति उभर कर आई होगी, उसे संस्मरण शैली में लिखिए।

प्रशंसा

बचपन के दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। प्रत्येक बच्चा किसी न किसी को अपना आदर्श मानता है, कोई अपने माता-पिता को, कोई गुरु को, कोई किसी महापुरुष को तो कोई अपने संगी साथियों को ही। वह उनका अनुकरण भी करता है। बेहतर भविष्य के लिए बचपन में जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालिए।

भाषा की बात

1. पाठ से निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।
   विद्वान, अनंत, निरपराधी, दंड, शांति।
2. निम्नलिखित शब्दों से उपसर्ग/प्रत्यय अलग कीजिए और मूल शब्द बताइए-
   उदाः निराहारी = निर् + आहार + ई
   सांप्रदायिकता, अप्रसन्नता, अपनापन, किनारीदार, स्वतंत्रता
3. निम्नलिखित उपसर्ग/प्रत्यय की सहायता से दो-दो शब्द बनाइए।
   उपसर्ग - अन्, अ, सत्, स्व, दुर्
   प्रत्यय - दार, हार, वाला
4. पाठ में आए सामासिक शब्द छाँटकर विग्रह कीजिए।
   पूजा-पाठ = पूजा और पाठ

परियोजना कार्य

"लड़कियों की संख्या कम होने पर भारतीय समाज का रूप कैसा होगा?" यह प्रश्न पाँच अलग-अलग व्यवसाय के लोगों से पूछिए और उनके उत्तर लिखिए।

SCERT TELANGANA

अनोखा उपाय

उपवाचक

- रावूरि भरद्वाज

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमारवर्मा था। वह एक अच्छा शासक था। कुमारवर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फसलें सूख गयीं। तालाब, गड्ढे सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थीं। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

राज्य में पशुओं का चारा भी मिलना मुश्किल हो गया। कई किसान अपने-अपने पालतू जानवर सस्ते दामों पर बेचने लगे। ऐसी हालत में राजभंडार का अनाज प्रजा में बाँट दिया जाने लगा। अड़ोस-पड़ोस के राज्यों से अनाज उधार लिया जाने लगा। फिर भी राजा को भविष्य की चिंता सता रही थी। राजा उत्पन्न परिस्थितियों के बारे में गंभीर रूप से सोचने लगा लेकिन इसका कोई पता नहीं चला। राजा के मन में ये सवाल उठ रहे थे कि अड़ोस-पड़ोस के सभी राज्य हरे-भरे हैं। वहाँ की प्रजा भी सुखी है। लेकिन न जाने इस राज्य में ऐसा क्यों हो रहा होगा...? क्या कारण हो सकते हैं...? इस समस्या का हल कैसे किया जायेगा...?

राजा कुमारवर्मा ने इस समस्या के हल की चर्चा के लिए कई बुद्धिमानों, हाज़िर जवाबदारों और विद्वानों को बुलवाया। चर्चा में कुछ बुद्धिमानों ने बताया- ''हे महाराज, भूलें कई तरह की होती हैं। कुछ भूलें सरलता से पहचानी जाती हैं तो कुछ पहचानी नहीं जातीं।'' कुछ हाज़िरजवाबदारों ने बताया- ''हे राजन! कुछ भूलों का आभास होता है और कुछ का आभास भी नहीं होता।'' कुछ विद्वानों ने बताया- ''हे प्रभु, कुछ भूलें सुधार के रूप में हो जाती हैं तो कुछ सुधार भी भूलों के रूप में बदल जाते हैं। ऐसी ही कोई जानी-अनजानी बात छिपी होगी जिससे आज राज्य में यह समस्या उत्पन्न हुई है।

राजा कुमारवर्मा ने पूछा- ''अब आप ही बतायें कि मुझे क्या करना चाहिए?''

सभी ने विचार-विमर्श कर राजा को यह सलाह दी- ''सभी तरह से खुशहाल किसी राज्य के राजा से भेंट करें। वहाँ के शासन नियमों का पता करें यहाँ के शासन नियमों में सुधार करें। इससे राज्य की समस्या का हल अवश्य हो सकता है।''

राजा कुमारवर्मा को यह उपाय अच्छा लगा। उसने तुरंत अपने पड़ोसी राज्य के महाराज सत्यसिंह से भेंट करने का निर्णय लिया और सेवकों से संदेश भेजा- ''राजाधिराज, महाराज सत्यसिंह जी को सादर प्रणाम। हमारे राज्य में अकाल से जनता त्रस्त है। इस समस्या के हल के लिए आपकी उचित सलाह व आपके शासन नियमों की जानकारी के लिए हम आपके यहाँ पधारना चाहते हैं। आशा है कि आप हमारा निवेदन स्वीकारें।''

SCERT TELANGANA

महाराज सत्यसिंह ने अपने संदेश में लिखा- ''आप और हम पड़ोसी राजा हैं। किसी भी समस्या में एक-दूसरे का हाथ बँटाना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे राज्य में आपका हार्दिक स्वागत है। आप हमारे आदरणीय अतिथि हैं। अतिथि के रूप में आपका सत्कार करने का सौभाग्य हमें मिल रहा है, इसके लिए हम कृतज्ञ हैं।''

इस प्रत्युत्तर के पढ़ते ही राजा कुमारवर्मा को अपने राज्य की समस्या का हल करने का कुछ हद तक उपाय मिल ही गया था। फिर भी राजा स्वयं पड़ोसी राज्य के राजा से भेंट करना चाहते थे।

देखते-देखते वह दिन आ ही गया। राजा कुमारवर्मा का पड़ोसी राज्य में भव्य स्वागत हुआ। राज्य देखकर राजा आश्चर्यचकित होने लगे। चारों तरफ जलाशय भरे हुए थे। नदियाँ लबालब थीं। नहरें बह रही थीं। ठंडी हवाएँ सन-सना रही थी। खेत भरी हरियाली से भिन-भिना रहे थे। फूलों के चमन खुश्बू से महक रहे थे। बाग-बगीचे फल-फूलों से लदे थे। ये सारी चीज़ें देखकर राजा कुमारवर्मा को बेहद खुशी हुई।

महाराज कुमारवर्मा की भेंट महाराज सत्यसिंह से हुई। ''मित्र आपका राज्य किसी स्वर्ग से कम नहीं है। मुझे लगता है कि जिन शासन नियमों को मैं नहीं जानता, उनका आप पूरा-पूरा पालन कर रहे हैं। इसीलिए आपकी प्रजा सुखी है। मैं भी अपनी प्रजा को सुखी देखना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सुशासन का हितोपदेश दीजिए।''

महाराज सत्यसिंह ने पहले तो मना कर दिया। किंतु राजा कुमारवर्मा के अनुरोध पर उन्होंने कहा- ''नहीं महाराज, मुझे मजबूर मत कीजिए। मैं दोषी हूँ। जो दोषी होता है, उसे हितोपदेश करने का कोई अधिकार नहीं होता। मैं आपको एक घटना सुनाता हूँ। मैं एक बार अपने अंगरक्षक के साथ इसी तरह उपवन में चर्चा कर रहा था। तभी मुझे राजमाता के पास ज़रूरी बात करने के लिए जाना पड़ा। मैंने अंगरक्षकों को अपने लौटने तक वहीं खड़े रहने का आदेश दिया था। राजमाता से बात करते-करते रात हो गयी। वहीं पर मैंने भोजन किया। सो गया। अगले दिन सुबह उठकर देखा तो खूब बारिश हो रही थी। सेवकों ने बताया कि देर रात से बारिश हो रही है। जब मैंने उपवन लौटकर देखा तो अंगरक्षक उसी स्थान पर भीगते हुए खड़े हैं। मैं बातचीत में इतना निमग्न हो गया था कि अंगरक्षकों को जाने के लिए भी नहीं कह सका। यह मेरी भूल थी। अतः ऐसी भूल करने वाले राजा को हितोपदेश देने का कोई अधिकार नहीं। मुझे क्षमा कीजिए।''

राजा कुमारवर्मा ने महाराज सत्यसिंह की इस घटना को पूरे ध्यान से सुना। उन्हें लगा कि राजमाता ही उन्हें हितोपदेश दे सकती है। उन्होंने राजमाता के दर्शन किये और अपनी इच्छा बतायी।

''पुत्र, सच कहूँ तो मैं भी दोषी हूँ। एक बार मेरे पुत्र ने अपनी पत्नी के लिए सुंदर ज़ेवर बनवाये। मेरे मन में ज़ेवर के प्रति लालच पैदा हो गया। यदि मैं अपने पुत्र या बहू से ज़ेवर माँगती, तो वे कभी मना नहीं करते। एक राजमाता का ज़ेवरों के प्रति आकर्षण होना दोष है। किसी दूसरे की वस्तु के प्रति लालच रखना भी ग़लत है। ऐसी भूल करने वाली मैं, स्वयं को हितोपदेश करने के योग्य नहीं

SCERT TELANGANA

समझती।''

राजा कुमारवर्मा आश्चर्य में पड़ गया। बाद में राजगुरु से भेंट की और उनसे उपदेश के लिए निवेदन किया।

तब राजगुरु ने कहा, ''महाराज, मुझे क्षमा कीजिए। मैं इसके योग्य नहीं। एक बार सुदूर देश से एक पंडित आया था। राजदर्शन करना चाहा। उसके पांडित्य की जाँच करने का समय न होने के कारण मैंने राजा को यह कह दिया कि वह बड़ा पंडित है। राजा मुझ पर असीम विश्वास रखते हैं। उन्होंने पंडित को ढेर सारा इनाम दिया। आगे चलकर मुझे पता चला कि वह पंडित केवल औसत था। मेरे आलस के कारण मैं राजा को उचित मार्गदर्शन न कर सका। ऐसी भूल करने वाला मैं, स्वयं को हितोपदेश के योग्य नहीं समझता।''

कुमारवर्मा बड़ी सोच में पड़ गया।

इन तीन घटनाओं से उसे यह सीख मिली कि हमें छोटी से छोटी भूल भी नहीं करनी चाहिए। यदि हमसे कोई भूल हो तो उसे सुधार लेना चाहिए।

राजा ने इस सीख का पालन किया। कुछ ही दिनों में उसका राज्य खुशहाल बन गया।

(वर्ष 2012 के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित स्वर्गीय श्री रावूरि भरद्वाज तेलुगु के प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। प्रस्तुत कहानी उनकी प्रसिद्ध रचना 'बंगारु कुंदेलु' से ली गयी है। इसका अनुवाद श्री सय्यद मतीन अहमद ने किया है।)

प्रश्न :

1. राजा कुमारवर्मा के राज्य में अकाल की स्थिति क्यों उत्पन्न हुई होगी?
2. अकाल की समस्या के परिष्कार के लिए राजा ने क्या-क्या उपाय सोचे होंगे?
3. राजा सत्यसिंह ने राजा कुमारवर्मा का स्वागत कैसे किया?
4. आपकी दृष्टि में किसकी भूल सबसे बड़ी थी और क्यों?
5. राजा कुमारवर्मा की जगह पर यदि आप होते तो अकाल की समस्या से कैसे जूझते?

SCERT TELANGANA

शब्द संपदा

अनंत - जिसका अंत न हो
अनुकंपा - दया
अपरिसीम - असीमित
अपव्यय - फ़िज़ूलखर्ची
अभियोग - आरोप
अल्पव्यस - कम उम्र
अवमूल्यन - मूल्य गिरा देना
अवली - छोटा आँवला
अस्तगामी - डूबता हुआ
अस्मिता - अस्तित्व, पहचान
अहैतुक - अकारण, बिना किसी कारण के

आबशार - निर्झर, झरना

इतिहासवेत्ता - इतिहास का जानकार

ईषत - थोड़ा, कुछ-कुछ, आंशिक रूप से

उछाह - उत्सव, आनंद
उन्मत्त - मतवाला
उपनिवेश - वह विजित देश जिसमें विजेता राष्ट्र के लोग आकर बस गए हों

कंडे - गाय भैंस के गोबर से बने उपले जो ईंधन के काम आते हैं।
कांजीहौस - मवेशीखाना, वह स्थान जहाँ लावारिस(काइन हाउस) जानवर रखे जाते हैं।
काबा - मुसलमानों का पवित्र स्थान
कारनै - कारण
किंकिणी - करधनी
कुलेल (कल्लोल) - क्रीड़ा
केलि - क्रीड़ा
कौड़ी न पाई - कुछ प्राप्त न हुआ
क्षरण - नाश
क्षीणवपु - दुबला पतला, कमज़ोर शरीर

खीनाँ - क्षीण हुआ
खुलेगी साँकल बंद द्वार की- चेतना व्यापक होगी, मन मुक्त होगा

गंडा - मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा
गण्य - गणनीय, सम्मानित
गदना - बनाना

SCERT TELANGANA

गराँव - फुँदेदार रस्सी जो बैल आदि के गले में पहनाई जाती है।
गोई - जोड़ी

चिरी - फाड़ी हुई
चुवै - रिसता है

छद्म - बनावटी

जनमिया - जन्म लेकर
जूआ (जुआ) - बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी
जेब टटोली - आत्मलोचन किया

झख मारना - मजबूर होना, वक्त बरबाद करना

टाटी - टट्टी, परदे के लिए लगाए हुए बाँस आदि की फट्टियों का पल्ला
टिटकार - मुँह से निकलने वाला टिक-टिक का शब्द

डाँड़ा - ऊँची ज़मीन

तात्कालिक - उसी समय का
तितल्ले - तीसरी मंजिल

थान - पशुओं के बाँधने की जगह
थुक्पा - सत्तू या चावल के साथ मूली, हड्डी और माँस के साथ पतली लेई की तरह पकाया हुआ खाद्य-पदार्थ
थूँनी - स्तंभ, टेक
थोङ्ला - तिब्बती सीमा का एक स्थान
दावानल - जंगल की आग
दोनों चिटें - ञेनम् गाँव के पास पुल से नदी पार करने के लिए जोङ्पोन् (मजिस्ट्रट) के हाथ की लिखी लमयिक् (राहदारी) जो लेखक ने अपने मंगोल दोस्त के माध्यम से प्राप्त की
दिग्भ्रमित - रास्ते से भटकना, दिशाहीन
दुलीचा - कालीन,छोटा आसन
दोन्विवक्स्तो - स्पेनिश उपन्यासकार सार्वेतेज (17 वीं शताब्दी) के उपन्यास 'डॉन विवक्ज़ोट' का नायक, जो घोड़े पर चलता था।

धृष्ट - लज्जारहित, निःसंकोच

नक्काशीदार - बेल-बूटे के काम से युक्त
निरचू - थोड़ा भी
निरापद - सुरक्षित
निराहार - बिना कुछ खाए-पिए
निर्वासन - देश निकाला
नैसगिति - सहज, स्वाभाविक

SCERT TELANGANA

पनहिया - पशु बाँधने की रस्सी
पछाई - पालतू पशुओं की एक नस्ल
परमधाम - स्वर्ग
परमार्थ - दूसरों की भलाई
पराकाष्ठा - अंतिम सीमा
परितृप्ति - पूरी तरह संतोष प्राप्त करना
परिधान - वस्त्र
प्रगल्भ - वाचाल, बोलने में संकोच न करने वाला
प्रतिमान - मानदंड
प्रतिवाद - विरोध
प्रतिष्ठित - सम्मानित
प्रतिस्पर्धा - होड़
पलायन - दूसरी जगह चले जाना, भागना
प्राणपण - जान की बाजी

बटमार - रास्ते में यात्रियों का लूट लेने वाला
बालिंडा - छप्पर की मज़बूत मोटी लकड़ी
बिड़ाल - बिलाव
बूठा - बरसा

भग्नावशिष्ट - खंडहर
भाँडा फूटा - भेद खुला

मरकत - पन्ना नामक रत्न
मर्म भेदी - अतिदुखद, दिल को लगने वाला
मल्लयुद्ध - कुश्ती
मसलहत - हितकर
माझी - नाविक, ईश्वर, गुरू
मिथक - प्राचीन पुराकथाओं का तत्व, जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ को वहन करता है
मुकुलित - अधखिला
मुखातिब - संबोधित
यूथभ्रष्ट - समूह या झुंड से निकला या निकाला हुआ

रगेदना - खदेड़ना
रस्सी कच्चे धागे की - कमज़ोर और नाशवान सहारे

लहरिया - रंग-बिरंगी धारियों वाली विशेष प्रकार की साड़ी जो सामान्यतः तीज, रक्षाबंधन आदि त्यौहारों पर पहनी जाती है।

वर्चस्व - प्रधानता
वशीकरण - वश में करना
वाइस चांसलर- कुलपति

SCERT TELANGANA

वाख - वाणी,शब्द या कथन
वादी - घाटी
विग्रह - अलगाव
विज्ञापति - प्रचारित/सूचित
विषाद - उदासी
वृंत - डंठल
व्याली - सर्पिणी

शती - सौ वर्ष का समय
शोख - चंचल

सनई - एक पौधा जिसकी छाल के रेशे से रस्सी बनाई जाती है।
समभावी - समानता की भावना
सरपत - घास-पात, तिनके
सर्वव्यापक - सबमें रहने वाला
साबिक़ा - वास्ता, सरोकार
सहिष्णुता - सहनशीलता
साहिब - स्वामी, ईश्वर
सुजान - चतुर, ज्ञानी
सुभर - अच्छी तरह भरा हुआ
सुरखाब - चक्रवाक पक्षी
सुरा - शराब
सुषुम सेतु - सुषुम्ना नाड़ी रूपी पुल, हठयोग में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक नाड़ी (सुषुम्ना) जो नासिका के मध्य भाग में स्थित है
सोंधी - सुगठित, मिट्टी पर पानी पड़ने से उठने वाली गंध
सौंदर्य प्रसाधन - सुंदरता बढ़ाने वाली सामग्री
स्वान (श्वान) - कुत्ता

हरना - आकर्षिक करना
हरारत - उष्णता या गर्मी
हिमकर - चन्द्रमा
हिम-आतप - सर्दी की धूप
हुकृंति - हुंकार
हुजूम - जनसमूह, भीड़

SCERT TELANGANA